भगत सिंह के जन्म दिवस 28 सितंबर 2023 से महात्मा गांधी की शहादत दिवस 30 जनवरी 2024 तक

प्रेम, बंधुत्व, समानता, न्याय और मानवता के लिए राष्ट्रीय अभियान

ढाई आखर प्रेम

National Cultural Jatha

राष्ट्रीय सांस्कृतिक जत्था

31 अक्टूबर से 03 नवंबर 2023

उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड पड़ाव का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक महत्व

ऋषिकेश

ऋषिकेश, गढ़वाल हिमालय का प्रवेश द्वार है, जहाँ से बद्री-केदार, यमुनोत्री-गंगोत्री और सिखों के प्रसिद्ध तीर्थ हेमकुंट साहब के लिए मार्ग जाता है।

ऋषिकेश का ऐतिहासिक महत्व है कि विश्व सर्वधर्म सम्मेलन में जाने से पहले स्वामी विवेकानन्द ने भारत भृमण किया था। इसी क्रम में स्वामी विवेकानन्द ऋषिकेश भी आये थे।

गांधी जी की हत्या के बाद उनकी चिता भस्म ऋषिकेश के साथ-साथ देश भर की नदियों, सरोवरों और समुंदर में प्रवाहित की गई थी। ऋषिकेश के त्रिवेणी घाट पर गांधी स्तम्भ भी बना हुआ है। गंगा नदी पर बना लक्ष्मण झूला पुल भी धर्म और आस्था के दृष्टिकोण से विश्व प्रसिद्ध है ।

कलियर शरीफ़

कलियर शरीफ विश्व प्रसिद्ध जलालुद्दीन साबिर साहब की दरगाह है। साबिर साहब 755 साल पहले यहां लंगर सेवा से आम आदमी को खाना खिलाया करते थे। इस लंगर में कोई भेदभाव नहीं होता था। किसी भी मजहब, किसी भी दीन और किसी भी जाति का व्यक्ति लंगर खा सकता था। साबिर साहब खुद एक दाना भी नहीं खाते थे। आज तक वही लंगर चला आ रहा है। ये आस्ताना इन्सानियत, प्रेम, मुहब्बत का स्थान है इसलिए सभी मजहबों के लोग यहां जियारत करने आते हैं। यहां हर साल उर्स (मेला) होता है, जिसमें पूरी दुनिया के जायरीन जियारत करने आते हैं।

शहीद स्थल, रुड़की

रुड़की स्थिति शहीद स्मारक (स्थल) सुनहरा गाँव में है। यहां एक वटवृक्ष है, जिस पर अंग्रेजों द्वारा स्वतंत्रता सेनानियों को फांसी दी गई थी। यहां स्वतंत्रता सेनानियों की याद में समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं

जमालपुर

हरिद्वार के गुरुकुल के पास स्थित गाँव जमालपुर अपने आपसी भाईचारे, सद्भावना और प्रेम के लिये जाना जाता है। इस गाँव में यह खास बात है कि इसमें सभी जाति, धर्मों के लोग आपस में मिलकर साथ-साथ रहते हैं। अपने सारे त्यौहार मिल-जुल कर मनाते हैं। यहाँ की रामलीला भी बहुत प्रसिद्ध है।

जत्था के पड़ाव

31 अक्टूबर 2023

प्रातः 9 बजे शहीद भगत सिंह स्मारक मुनि की रेती, टिहरी गढ़वाल से यात्रा आरम्भ

शीशम झाड़ी, चन्द्रेश्वर नगर, स्वामी विवेकानन्द स्मारक त्रिवेणी घाट से होते हुए मध्याह्न में

गांधी स्तम्भ त्रिवेणी घाट पर जनसभा

अपराह्न यात्रा श्यामपपुर पंहुचेगी

रात्रि विश्राम श्यामपुर

01 नवम्बर 2023

प्रातः यात्रा श्यामपुर से चल कर खदरी में विचार गोष्ठी

नालंदा विद्यालय में विद्यार्थियों को सम्बोधन, मध्याह्न में ग्राम पंचायत खदरी में भोजन

अपराह्न में ग्राम पंचायत खेरीखुर्द में स्वागत तथा पंचायत भवन में स्वागत

सायं को यात्रा का हरिद्वार ग्रामीण क्षेत्र जमालपुर में आगमन

जमालपुर में सांस्कृतिक कार्यक्रम और रात्रि विश्राम

02 नवम्बर 2023

प्रातः में ज्वाला पुर में उसके बाद बहादराबाद, धनोरी में यात्रा का आगमन

सायं को यात्रा पिरानकलियर शरीफ पहुंचेगी

रात्रि विश्राम पिरानकलियर

03 नवम्बर 2023

प्रातः पिरानकलियर से यात्रा आरम्भ

ग्रामीण क्षेत्रों से चलते हुए मध्याह्न को बी.एम.एस. कॉलेज में छात्रों और बुद्धिजीवियों के साथ संवाद

बी.एम.एस. कॉलेज में सांस्कृतिक कार्यक्रम

भगत सिंह चौक पर माल्यार्पण

अपराह्न में सुनहरा बाग जाकर स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों को श्रद्धांजलि

यात्रा का समापन

हयात ले के चलो क़ायनात ले के चलो
चलो तो सारे ज़माने को साथ ले के चलो

- मख़दूर मोहिउद्दीन

ढाई आखर प्रेम
National Cultural Jatha
28 September 2023 to 30 January 2024

प्रिय दोस्तो,

हम समान विचारधारा वाले प्रगतिशील सांस्कृतिक संगठन आपको 'ढाई आखर प्रेम' नामक हमारे सांस्कृतिक अभियान में आमंत्रित कर रहे हैं। यह एक राष्ट्रव्यापी सांस्कृतिक जत्था (पैदलयात्रा) है जो 28 सितंबर 2023 (भगत सिंह जयंती) को अलवर, राजस्थान से शुरू होकर देश के 22 राज्यों की यात्रा करते हुए 30 जनवरी 2024 (महात्मा गांधी शहादत दिवस) को दिल्ली में समाप्त होगा। यह जत्था आपसी प्रेम, शांति और सौहार्द्र का उत्सव है जो दुनिया में व्याप्त नफ़रत और अविश्वास की भावना के जवाब में हम संस्कृतिकर्मियों और जिम्मेदार नागरिकों की एक जरूरी पहल है।

इस जत्था के रास्तों में मिलने वाले लोगों के सम्मान में हम गीत गाएंगे, नृत्य करेंगे, नाटक प्रस्तुत करेंगे, हथकरघा से बनीं चीजें लोगों से साझा करेंगे जिन्हें आज लोग विस्मृत कर चुके हैं, अपनी माटी में रंगे प्रेम के धागों को बुनने और बांटने वाले समाज सुधारकों, संतों, कलाकारों, लोक-कलाकारों, कवियों और आजादी के दीवानों को याद करते उनके जन्म और कर्मस्थली जाएंगे। 'ढाई आखर प्रेम' जत्था गंगा-जमुनी तहजीब की ऊष्मा से भरा स्वतंत्रता, समता, न्याय और एकजुटता को फिर से पाने और जीने की कोशिश के साथ इसे पुनः समाज में स्थापित करने का प्रयास है जिसे नफरत, विभाजन, अहंकार और पहचान की वर्तमान राजनीति ने बड़ी क्रूरता से कमजोर कर किया है।

'ढाई आखर प्रेम' के इस जत्था में हम सभी प्रगतिशील सामाजिक, सांस्कृतिक संगठनों, कलाकारों, कवियों, लेखकों, संगीतकारों, बुद्धिजीवियों, सामाजिक-सांस्कृतिक व पर्यावरण कार्यकर्ताओं के साथ आम जन को भी इस सामूहिक अभियान में सहभागिता के लिए आवाज दे रहे हैं, आमंत्रित कर रहे हैं। आप हमारे दोस्त, सहयोगी और सहयात्री के रूप में इस राष्ट्रीय अभियान में सहज ही समान रूप से शामिल हो सकते हैं, हम आपका दिल से स्वागत करते हैं।

अधिक जानकारी के लिए

उत्तराखण्ड संयोजक:

डॉ. वी.के. डोभाल, फोनः +91 93581 27654

सतीश कुमार, फोनः +91 99178 93400

हरिओम पाली, फोनः +91 94129 87800

धर्मानंद लखेड़ा, फोनः +91 70172 04585

परवीन कुमार, फोनः +91 94126 50323

ओम प्रकाश नूर, फोनः +91 99971 71695

अफ़जल मंगलौरी, फोनः +91 9568 104786

केन्द्रीय संयोजन दल:

फोनः +91 98210 43733

ईमेलः dhaiaakharprem@gmail.com

REGISTER HERE

जत्था में शामिल होने के लिए रजिस्ट्रेशन हेतु

यहाँ क्लिक करें

Follow for updates

www.dhaiaakharprem.in

www.facebook.com/dhaiaakharprem

@dhaiaakharprem

@dhaiaakharprem2023

www.youtube.com/@dhaiaakharprem

'ढाई आखर प्रेम; राष्ट्रीय सांस्कृतिक जत्था' आयोजन समिति

भारतीय जन नाट्य संघ (इप्टा), उत्तराखण्ड